International Journal of Arts, Humanities and Social Studies

ISSN Print: 2664-8652
ISSN Online: 2664-8660
Impact Factor: RJIF 8
IJAHSS 2026; 8(1): 31-35
www.socialstudiesjournal.com
Received: 12-12-2025
Accepted: 03-01-2026

स्वाति
शोधार्थी, दृश्य कला विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश, भारत।

डॉ. निरुपमा सिंह
प्रोफेसर, दृश्य कला विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश, भारत।

Corresponding Author:
स्वाति
शोधार्थी, दृश्य कला विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश, भारत।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में हिमाचल प्रदेश की पहाड़ी भित्ति चित्रण परंपरा: लोक मन की अभिव्यक्ति और शिव लीला का कलात्मक प्रस्तुतीकरण

स्वाति, निरुपमा सिंह

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26648652.2026.v8.i1a.369

सारांश
कला मानव सभ्यता की सामूहिक चेतना, लोक विश्वासों और सांस्कृतिक मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति है। यह केवल सौंदर्यबोध तक सीमित न रहकर समाज के धार्मिक, सामाजिक और पर्यावरणीय परिवेश को दृश्य रूप में प्रस्तुत करती है। भारतीय कला परंपरा प्रागैतिहासिक शैल चित्रों से लेकर भित्ति चित्रों और लघु चित्र शैलियों तक एक सतत विकास प्रक्रिया का परिणाम है। इस शोध-पत्र में कला को लोक मन की अभिव्यक्ति के रूप में समझते हुए भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System-IKS) के संदर्भ में हिमाचल प्रदेश की पहाड़ी भित्ति चित्रण परंपरा का विश्लेषण किया गया है। विशेष रूप से शिव लीला के चित्रण, लोक जीवन से उसके संबंध, चित्रण तकनीकों, रस-भाव की अभिव्यक्ति पर प्रकाश डाला गया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि हिमाचल की भित्ति चित्रण परंपरा न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि सामाजिक संरचना, लोक विश्वास और सांस्कृतिक पहचान का सजीव दस्तावेज भी है।

शब्द-कुंजी : कला, भारतीय ज्ञान प्रणाली, भित्ति चित्र, पहाड़ी चित्रकला, शिव लीला, हिमाचल प्रदेश

प्रस्तावना

भूमिका

कला लोक मन की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। यह समाज की सामूहिक चेतना, विश्वास, परंपराएँ और जीवन मूल्यों को अपने भीतर समाहित करती है। कला एक निरंतर गतिमान परंपरा है, जिसके माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी लोकमान्यताओं, रीति-रिवाज़ों, धार्मिक आस्थाओं और सांस्कृतिक मूल्यों का हस्तांतरण होता रहा है। यही कारण है कि कला मानव की सरल भावनाओं की अभिव्यक्ति होने के साथ-साथ उसके सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय परिवेश की सजीव झांकी भी प्रस्तुत करती है। साधारण शब्दों में कहा जाए तो कला लोक मन का वक्तव्य है।

भारतीय परंपरा में कला को धर्म, दर्शन और जीवन से अलग नहीं माना गया। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में कला को लोक और वेद-दोनों का प्रतिनिधि कहा गया है, नाट्यशास्त्र को पंचम वेद की कहा जाता है जहाँ कला का उद्देश्य रस निष्पत्ति के माध्यम से आत्मिक आनंद और चेतना का विकास है। इस प्रकार भारतीय कला एक समग्र जीवन दृष्टि प्रस्तुत करती है।

कला की ऐतिहासिक निरंतरता

प्रागैतिहासिक शैल चित्रों से लेकर ऐतिहासिक काल तक यह स्पष्ट होता है कि मानव केवल जीवन-निर्वाह तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने अपने अनुभवों, विश्वासों और भावनाओं को चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। भीमबेटका जैसे स्थलों पर प्राप्त शैलचित्र आदिम मानव की सामूहिक चेतना, भय, आस्था और सामाजिक जीवन को प्रतिबिंबित करते हैं।

भारतीय चित्रकला की परंपरा इसी निरंतरता का परिणाम है, जो अजंता, एलोरा, बाघ, बादामी और सीतनवासल की गुफाओं से लेकर विभिन्न प्रांतों की लघु चित्र शैलियों तक विस्तृत है। इन भित्ति चित्रों में धार्मिक कथाओं के साथ-साथ तत्कालीन समाज, वेशभूषा और लोक जीवन की झलक भी मिलती है।

पर्यावरण और कला का संबंध

पर्यावरण सर्वव्यापी है और उसी प्रकार कला भी। भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ कला के स्वरूप को गहराई से प्रभावित करती हैं। हिमालयी क्षेत्र में विकसित पहाड़ी चित्रकला और भित्ति चित्र इस तथ्य का सशक्त उदाहरण हैं। हिमालय की सुरम्य घाटियों, शांत वातावरण और देव-संस्कृति ने यहाँ की कला को विशिष्ट संवेदनशीलता प्रदान की। बसोहली, गुलेर और कांगड़ा शैली में कोमल रेखाएँ, हल्के रंग और भावप्रधान अभिव्यक्ति दिखाई देती है। यह कला मुग़ल और राजस्थानी चित्रकला से संवाद करते हुए भी अपनी स्वतंत्र पहचान बनाए रखती है।

पहाड़ी चित्रकला और भारतीय ज्ञान प्रणाली

पहाड़ी चित्रकला और भित्ति चित्रों में लोक जीवन, प्रकृति और धर्म का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है । कृष्ण-राधा की लीलाएँ, बारहमासा, बिहारी सतसई, कालिदास की ऋतुसंहार तथा देवी महामाया जैसे विषयों का चित्रण साहित्य और चित्रकला के संगम को दर्शाता है। ये चित्र भारतीय ज्ञान परंपरा में वर्णित चित्रकला के षडंग सिद्धांत-रूपभेद, प्रमाण, भाव, लावण्य योजना, सादृश्य और वर्णिकाभंग-की व्यावहारिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार पहाड़ी चित्रकला भारतीय ज्ञान प्रणाली का सजीव अंग बन जाती है।

हिमाचल प्रदेश की भित्ति चित्रण परंपरा और लोक जीवन हिमाचल प्रदेश धौलाधार पर्वत श्रृंखला की गोद में स्थित एक सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राज्य है। यहाँ की लोक प्रदर्शन कलाएँ-जैसे नाटी नृत्य, गद्दी नृत्य और करियाला लोकनाट्य-लोक जीवन, सामाजिक संरचना और धार्मिक आस्था से गहराई से जुड़ी हैं।

मंदिर भित्ति चित्र इस लोक संस्कृति के दृश्य दस्तावेज हैं, जो अशिक्षित समाज के लिए दृश्य ग्रंथ का कार्य करते हैं और कथा-वाचन की परंपरा को जीवित रखते हैं।

पहाड़ी भित्ति चित्रों में शिव लीला का लोकात्मक स्वरूप

अक्सर पहाड़ी कला को केवल कृष्ण लीला तक सीमित माना जाता है, किंतु पहाड़ी भित्ति चित्रों में शिव लीला का चित्रण अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिमालयी क्षेत्र को लोकमान्यताओं और पौराणिक संदर्भों में भगवान शिव का ससुराल माना गया है, जिसका प्रभाव यहाँ की दृश्य कला पर स्पष्ट दिखाई देता है।

इन भित्ति चित्रों में शिव को केवल तपस्वी या संहारक देवता के रूप में नहीं, बल्कि लोकदेव, गृहस्थ, पति और पिता के रूप में चित्रित किया गया है। शिव विवाह और शिव की बारात के दृश्य भूत-प्रेत, गण और लोकवाद्यों के साथ अत्यंत लोकात्मक रूप में अंकित हैं। कैलाश में पारिवारिक जीवन, पार्वती और पुत्रों के साथ शांत गृहस्थ रूप तथा दैनिक लोक प्रसंग-जैसे पार्वती द्वारा भांग बनाना-इन चित्रों को मानवीय और आत्मीय बनाते हैं।

शिव यहाँ योगी, नटराज और गृहस्थ-तीनों रूपों में दिखाई देते हैं, जो पहाड़ी समाज की सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक संरचना को प्रतिबिंबित करता है।

पहाड़ी भित्ति-चित्रों में तकनीक, रंग एवं पारंपरिक विधियाँ

यह कला मुख्यतः मंदिरों, राजमहलों, मठों तथा कुलीन आवासों की दीवारों पर निर्मित की जाती थी। पहाड़ी भित्ति-चित्र स्थानीय पर्यावरण, धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक जीवन से गहराई से जुड़े हुए हैं । इन चित्रों में पौराणिक, धार्मिक, प्रेमात्मक तथा दरबारी जीवन से संबंधित विषयों का चित्रण मिलता है, जिससे तत्कालीन समाज की वैचारिक और सौंदर्यात्मक चेतना का स्पष्ट प्रतिबिंब दिखाई देता है।

पहाड़ी भित्ति-चित्रों की तकनीक पूर्णतः पारंपरिक और स्थानीय संसाधनों पर आधारित थी । चित्रण से पूर्व दीवारों की सतह को विशेष रूप से तैयार किया जाता था, जिसमें पत्थर या ईंट की दीवारों पर चूना, रेत तथा कभी-कभी गुड़ या वनस्पति गोंद मिलाकर पलस्तर किया जाता था । इस पलस्तर को अच्छी तरह सुखाकर और चिकना करके चित्रांकन हेतु उपयुक्त बनाया जाता था। अधिकांश पहाड़ी भित्ति-चित्र सेक्को तकनीक में बनाए गए हैं, जिसमें सूखी सतह पर रंगों का प्रयोग किया जाता था। प्रारंभिक रेखांकन कोयले या लाल मिट्टी से किया जाता था और इसके पश्चात रंग भरे जाते थे । सशक्त एवं स्पष्ट बाह्य रेखाएँ (Bold Outlines) पहाड़ी भित्ति-चित्रों की प्रमुख शैलीगत विशेषता मानी जाती हैं।

इन भित्ति-चित्रों में प्रयुक्त रंग पूर्णतः प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त किए जाते थे। लाल रंग गेरू से, पीला हरताल से, नीला लैपिस लाजुली या नील से, हरा मालाकाइट या नीले-पीले रंगों के मिश्रण से, काला दीपक की कालिख से तथा सफेद चूने से बनाया जाता था। रंगों को दीवार पर स्थायित्व प्रदान करने के लिए प्राकृतिक बाइंडिंग माध्यमों जैसे पशु गोंद, अंडे की जर्दी अथवा वनस्पति रस का प्रयोग किया जाता था। रंगों की प्रकृति सौम्य, मृदु और संतुलित होती थी, जिससे चित्रों में आध्यात्मिकता और काव्यात्मक भाव उत्पन्न होता है। अत्यधिक चमकीले रंगों के स्थान पर सीमित और नियंत्रित रंग योजना का प्रयोग पहाड़ी कला की विशिष्ट पहचान है।

पारंपरिक विधियों की दृष्टि से पहाड़ी भित्ति-चित्रकला में शास्त्रीय भारतीय कला परंपरा और स्थानीय लोक तत्वों का सुंदर समन्वय दिखाई देता है । चित्रों में रामायण, महाभारत, भागवत पुराण, राधा-कृष्ण की लीलाएँ, ऋतु-चित्रण तथा दरबारी दृश्य प्रमुख विषय रहे हैं। कथात्मक क्रम (Narrative Sequence) में चित्रांकन की परंपरा इन भित्ति-चित्रों को विशेष महत्व प्रदान करती है। आकृतियों के चेहरे भावपूर्ण, नेत्र बड़े और अभिव्यंजक तथा मुद्राएँ कोमल एवं लयात्मक होती हैं। इस कला का ज्ञान गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से मौखिक रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होता रहा, जिससे इसकी तकनीकी और शैलीगत निरंतरता बनी रही। इस प्रकार पहाड़ी भित्ति-चित्र केवल सजावटी कला न होकर हिमालयी क्षेत्र की सांस्कृतिक, धार्मिक और सौंदर्यात्मक चेतना का सजीव दस्तावेज हैं।

भित्ति चित्र 1: पार्वती द्वारा शिव को भांग अर्पण करते हुए (शिव शक्ति मंदिर छतराडी चंबा हिमाचल प्रदेश)

भित्ति चित्र में भगवान शिव को एक शांत, लोकात्मक और गृहस्थ स्वरूप में दर्शाया गया है। शिव आसन पर विराजमान हैं, उनके शरीर पर भस्म, रुद्राक्ष माला और साधारण आभूषण अंकित हैं। उनके चेहरे पर गंभीरता के स्थान पर सौम्यता और आत्मीयता का भाव दिखाई देता है, जो उन्हें लोकदेव के रूप में प्रस्तुत करता है। इस दृश्य में माता पार्वती शिव के सम्मुख खड़ी हैं और उनके हाथ में पात्र है, जिसमें भांग अर्पित करती हुई दिखाई देती हैं। यह प्रसंग पहाड़ी लोक परंपरा में शिव-पार्वती के दैनिक जीवन से जुड़ा एक महत्वपूर्ण दृश्य माना जाता है।

भांग शिव से जुड़ा एक प्रमुख प्रतीक है, जिसे यहाँ केवल धार्मिक वस्तु के रूप में नहीं, बल्कि लोक जीवन और सांस्कृतिक व्यवहार के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पार्वती द्वारा भांग अर्पित करने का यह दृश्य शिव को केवल तपस्वी या संहारक देवता के रूप में नहीं, बल्कि एक गृहस्थ, पति और लोक जीवन से जुड़े देवता के रूप में स्थापित करता है । पृष्ठभूमि में प्राकृतिक तत्व-वृक्ष, भूमि और पशु-हिमालयी परिवेश की पहचान को सुदृढ़ करते हैं।

यह भित्ति चित्र पहाड़ी कला परंपरा की उस विशेषता को उजागर करता है, जहाँ दैवी कथाओं को मानवीय और घरेलू प्रसंगों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। शिव और पार्वती के बीच का यह आत्मीय क्षण लोक विश्वासों, सामाजिक संरचना और हिमालयी जीवन शैली का सजीव प्रतिबिंब है।

यहाँ शिव लीला के एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रसंग-शिव विवाह-की ओर संकेत करता है। चित्र में गतिशीलता और समूह संरचना दिखाई देती है, जो बारात के दृश्य को दर्शाती है। आकृतियों की सरल रेखाएँ, सीमित रंग योजना और लोक

शैली यह स्पष्ट करती है कि यह दृश्य किसी शास्त्रीय दरबारी शैली की बजाय जनसामान्य की दृष्टि से रचा गया है। शिव की बारात में गण, लोक पात्र और वाद्य यंत्रों की उपस्थिति का संकेत मिलता है। यह चित्र हिमालयी लोक मान्यता को दर्शाता है, जहाँ शिव का विवाह एक सामाजिक और सामूहिक उत्सव के रूप में देखा जाता है। यहाँ शिव एक दूल्हे के रूप में, समाज के बीच उपस्थित हैं।

भित्ति चित्र 2: शिव विवाह और बारात का दृश्य (नर्वदेशवर मंदिर सुजानपुर हिमाचल प्रदेश)

भित्ति चित्र 3: नटराज रूप में शिव-तांडव लील (नर्वदेशवर मंदिर सुजानपुर हिमाचल प्रदेश)

इस भित्ति चित्र में भगवान शिव का नटराज रूप अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अंकित है। शिव नृत्य मुद्रा में हैं, उनका शरीर गतिशील व लयबद्ध प्रतीत होता है। घुमावदार रेखाएँ और संतुलित रचना तांडव की ऊर्जा और सृष्टि के चक्र का संकेत देती हैं। यह रूप सृजन, संरक्षण और संहार-तीनों तत्वों का प्रतीक है। सीमित रंगों और क्षतिग्रस्त सतह के बावजूद शिव की शक्ति और गति स्पष्ट रूप से अनुभव की जा सकती है। यह चित्र दर्शाता है कि पहाड़ी भित्ति चित्रों में गहन दार्शनिक अवधारणाओं को भी सरल और लोक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इस प्रकार पहाड़ी भित्ति चित्रकला भारतीय कला परंपरा की एक महत्वपूर्ण धरोहर है। यह शैली न केवल कृष्ण लीला की कोमलता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि मंदिर भित्ति चित्रों में अंकित शिव लीला की सरलता, लोकात्मकता और भावनात्मक सौंदर्य के लिए भी समान रूप से दर्शनीय है। लोक मन की अभिव्यक्ति और शिव लीला का यह कलात्मक प्रस्तुतीकरण पहाड़ी कला को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता है।

इस भित्ति-चित्र में शिव-पार्वती को देव-परिवार सहित यात्रा करते हुए दर्शाया गया है, जो शैव परंपरा की लोकात्मक और पारिवारिक अवधारणा को सशक्त रूप में अभिव्यक्त करता है। भगवान शिव नंदी पर आरूढ़ हैं और उनके आयुध, भस्म, रुद्राक्ष एवं व्याघ्रचर्म उनके तपस्वी और योगी स्वरूप को रेखांकित करते हैं। माता पार्वती को सिंह अथवा व्याघ्र पर विराजमान दिखाया गया है, जिनकी गोद में बालक (गणेश अथवा कार्तिकेय) बैठा हुआ है, जिससे मातृत्व और पारिवारिक स्नेह का भाव उभरकर सामने आता है। अग्रभाग में चलता हुआ गण या सेवक गति और यात्रा के भाव को सुदृढ़ करता है। सपाट आकृतियों, सीमित प्राकृतिक रंगों तथा लाल पृष्ठभूमि के माध्यम से चित्र में सरलता और स्पष्टता बनी रहती है। यह भित्ति-चित्र 17वीं-18वीं शताब्दी की पहाड़ी चित्रकला परंपरा का प्रतिनिधि उदाहरण है, जहाँ दैवी विषयवस्तु को लोकजीवन के निकट लाकर प्रस्तुत किया गया है।

भित्ति चित्र 4: शिव-पार्वती एवं देव-परिवार की यात्रा (डाडा सिबा कृष्ण मंदिर हिमाचल प्रदेश)

भित्ति चित्र 5: संस्कार अथवा पारिवारिक आशीर्वाद का दृश्य (डाडा सिबा कृष्ण मंदिर हिमाचल प्रदेश

यह भित्ति-चित्र एक संस्कारात्मक और भावनात्मक दृश्य को प्रस्तुत करता है, जिसमें देवत्व और मानवीय संवेदना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। चित्र में माता पार्वती पात्र बालक गणेश को गोद में लिए हुए है, जबकि एक पुरुष पात्र-संभवतः शिव-बालक पर आशीर्वाद का हस्त रखे हुए है। यह दृश्य नामकरण, दीक्षा अथवा किसी धार्मिक संस्कार का प्रतीक माना जा सकता है। सीमित रंग योजना, संतुलित रचना और सजावटी सीमाएँ चित्र को सहज गरिमा प्रदान करती

हैं। यहाँ देवताओं को पारिवारिक भूमिका में प्रस्तुत कर भक्त और ईश्वर के बीच आत्मीय संबंध स्थापित किया गया है। यह विशेषता पहाड़ी मंदिर भित्ति-चित्रण की उस परंपरा को दर्शाती है, जिसमें धार्मिक विषयों को सरल, भावप्रधान और लोकबोधगम्य रूप में अभिव्यक्त किया गया है।

भित्ति चित्र 6: शिव-पार्वती का शांत दृश्य (डाडा सिबा कृष्ण मंदिर हिमाचल प्रदेश)

यह भित्ति-चित्र मंदिर की मेहराब में शिव-पार्वती को शांत, स्थिर एवं सौम्य भाव में प्रस्तुत किया गया है। शिव के साथ नंदी की उपस्थिति उनके वाहन और भक्त के प्रतीक रूप को सुदृढ़ करती है, जबकि पार्वती का कोमल स्वरूप दैवी संतुलन और करुणा का भाव उत्पन्न करता है। चारों ओर बने पुष्पीय और ज्यामितीय अलंकरण मंदिर के स्थापत्य सौंदर्य को बढ़ाते हैं। यद्यपि समय और प्राकृतिक प्रभावों से रंगों में क्षरण स्पष्ट है, फिर भी लाल, नीले, हरे और पीले रंगों की गहनता चित्र की आध्यात्मिक गरिमा को बनाए रखती है। यह चित्र 17वीं-18वीं शताब्दी की पहाड़ी भित्ति-चित्रण परंपरा में कला, भक्ति और स्थापत्य के समन्वित स्वरूप का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

भित्ति चित्र 7: कैलाश के अधिपति: पहाड़ी भित्ति चित्रों में शिव-पार्वती का पारिवारिक स्वरूप (रामगोपाल मंदिर डमताल हिमाचल प्रदेश)

इस भित्ति चित्र में भगवान शिव देवी पार्वती के साथ शांत और सौम्य पारिवारिक रूप में अंकित हैं। उनके समीप नंदी तथा अन्य पशु उपस्थित हैं, जो शिव के पशुपति स्वरूप और समस्त जीव-जगत के संरक्षक भाव को दर्शाते हैं। पृष्ठभूमि में पर्वत, जल और हरित भूमि कैलाश तथा प्राकृतिक तपोभूमि का प्रतीक हैं। संतुलित रचना, सपाट आकृतियाँ और सीमित रंग योजना पहाड़ी भित्ति चित्रकला की लोकात्मक सरलता को उजागर करती है। यह चित्र शिव को केवल संहारक नहीं, बल्कि करुणामय गृहस्थ और प्रकृति से एकात्म देवता के रूप में प्रस्तुत करता है।

भित्ति चित्र 8: "लय और लीला: सौम्य गृहस्थ भाव में शिव-पार्वती" (नर्वदेशवर मंदिर सुजानपुर हिमाचल प्रदेश)

इस भित्ति चित्र में भगवान शिव का अधिक रहस्यमय और गतिशील स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। उनकी देह-भंगिमा वक्र और प्रवाहपूर्ण रेखाओं से युक्त है, जो नृत्य, योग और तांत्रिक ऊर्जा का संकेत देती है। अलंकृत सीमाएँ और घुमावदार सजावटी तत्व रचना में लयात्मकता भरते हैं। यद्यपि समय के प्रभाव से चित्र की सतह क्षतिग्रस्त है, फिर भी शिव की दैवी शक्ति, तपस्वी भाव और आध्यात्मिक गूढ़ता स्पष्ट रूप से अनुभूत होती है। यह चित्र पहाड़ी शैली में शिव लीला की सरल किंतु प्रभावशाली अभिव्यक्ति को दर्शाता है।

अवलोकन

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि कला केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि लोक मन, सामाजिक संरचना और भारतीय ज्ञान प्रणाली का सजीव प्रतिबिंब है। हिमाचल प्रदेश की भित्ति चित्रण परंपरा-विशेषकर शिव लीला के चित्रण-भारतीय सांस्कृतिक चेतना, लोक विश्वास और क्षेत्रीय पहचान को गहराई से अभिव्यक्त करती है। समकालीन संरक्षण प्रयासों के माध्यम से यह परंपरा भविष्य की पीढ़ियों के लिए सांस्कृतिक स्मृति और ज्ञान का अमूल्य स्रोत बनी रह सकती है।

कला केवल अपने निर्माण काल तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह स्मृति और सांस्कृतिक उत्तराधिकार के रूप में पीढ़ियों के बीच निरंतर प्रवाहित होती रहती है। आधुनिक समय में पारंपरिक कला रूपों के संरक्षण की आवश्यकता बढ़ गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को शिक्षा और अनुसंधान से जोड़ा गया है। किसी भी समाज की कला परंपरा उस समाज की ऐतिहासिक चेतना, सामूहिक अनुभव और सांस्कृतिक स्मृति को संरक्षित करने का कार्य करती है। हिमाचल प्रदेश की पहाड़ी एवं भित्ति चित्र परंपरा को इसी अंतर-पीढ़ीय दृष्टिकोण से समझा जाना आवश्यक है। ये भित्ति चित्र केवल धार्मिक आख्यानों का दृश्य रूप नहीं हैं, बल्कि वे उस समाज की जीवन शैली, सामाजिक संबंधों, लोक विश्वासों और नैतिक मूल्यों का स्थायी अभिलेख भी हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत स्मृति को केवल मानसिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संरचना का आधार माना गया है। श्रुति और स्मृति की परंपरा में ज्ञान का संरक्षण मौखिक, दृश्य और अनुष्ठानिक माध्यमों से हुआ है। हिमाचल के

मंदिरों में बने भित्ति चित्र इसी स्मृति परंपरा का दृश्यात्मक विस्तार हैं। जब एक ग्रामीण समाज मंदिर में प्रवेश करता है और शिव विवाह, शिव की बारात या पारिवारिक जीवन के चित्र देखता है, तो वह केवल एक कथा नहीं देखता, बल्कि अपनी सांस्कृतिक पहचान से साक्षात्कार करता है।

इन भित्ति चित्रों का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि ये चित्र शिक्षा के औपचारिक ढाँचे से बाहर रहकर ज्ञान का संप्रेषण करते हैं। ये चित्र लोक समाज को धर्म, नैतिकता, सामाजिक संतुलन और प्रकृति के साथ सामंजस्य का पाठ पढ़ाते हैं। उदाहरणस्वरूप, शिव का गृहस्थ रूप सामाजिक संतुलन का प्रतीक है, जबकि नटराज का रूप सृष्टि के गतिशील स्वरूप को दर्शाता है। योगी शिव आत्मसंयम और तप का संदेश देते हैं। इस प्रकार एक ही देवता के विविध रूप जीवन के विविध आयामों को संतुलित करते हैं।

समकालीन समय में जब पारंपरिक समाज संरचनाएँ तेज़ी से बदल रही हैं, तब ऐसी कला परंपराएँ सांस्कृतिक स्थायित्व की भूमिका निभाती हैं। यदि इन भित्ति चित्रों का संरक्षण, अध्ययन और डिजिटलीकरण सुनियोजित ढंग से किया जाए, तो यह न केवल कला इतिहास के लिए, बल्कि समाजशास्त्र, मानवविज्ञान और भारतीय ज्ञान प्रणाली के अध्ययन के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार हिमाचल प्रदेश की भित्ति चित्र परंपरा भविष्य की पीढ़ियों के लिए केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद और ज्ञान के जीवंत स्रोत के रूप में बनी रह सकती है।

संदर्भ सूची

1. आर्चर, डब्ल्यू. जी., इंडियन पेंटिंग्स फ्रॉम द पंजाब हिल्स, लंदन: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस-पंजाब पहाड़ी क्षेत्र की चित्रकला पर आधारित महत्वपूर्ण अध्ययन।
2. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, हिमाचल की भित्ति चित्र परंपरा-हिमाचल प्रदेश की मंदिर भित्ति चित्रकला का प्रलेखन एवं विश्लेषण।
3. कोठारी, कोमल, भारतीय लोक और पारंपरिक कला, जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स-भारतीय लोक एवं परंपरागत कला पर व्यापक अध्ययन।
4. क्रैमरिश, स्टेला, भारतीय मंदिर कला (हिंदी अनुवाद)-भारतीय मंदिर कला और उससे जुड़ी चित्र परंपराओं का शास्त्रीय विवेचन।
5. गोस्वामी, बी. एन., पहाड़ी चित्रकला, नेशनल म्यूज़ियम, नई दिल्ली-पहाड़ी चित्रकला की शैली, विषयवस्तु और विकास पर प्रामाणिक ग्रंथ।
6. नागर, शांतिलाल, द टेम्पल्स ऑफ हिमाचल प्रदेश-हिमाचल प्रदेश के मंदिरों की स्थापत्य, मूर्तिकला एवं चित्र परंपरा का अध्ययन।
7. ब्राउन, पर्सी, भारतीय चित्रकला का इतिहास, नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन-भारतीय चित्रकला परंपरा का ऐतिहासिक विवेचन।
8. मित्रा, स्वाति, टेम्पल्स ऑफ हिमाचल-हिमाचल प्रदेश के मंदिरों की कला, संस्कृति और भित्ति चित्रों का सचित्र विवरण।
9. वात्स्यायन, कपिला, भारतीय कला परंपरा, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन-भारतीय कला की दार्शनिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विवेचन।
10. शर्मा, कोमल, भारतीय चित्रकला का इतिहास, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन-प्राचीन से आधुनिक काल तक भारतीय चित्रकला का अध्ययन।
11. शर्मा, ओ. सी., हिमाचल की कला परंपरा, शिमला: हिमाचल अकादमी-हिमाचल प्रदेश की कला और सांस्कृतिक परंपराओं पर केंद्रित ग्रंथ।
12. श्रीरामन, पी. एस., म्यूरल्स ऑफ तिरा-सूजनपुर-हिमाचल प्रदेश के तिरा-सूजनपुर मंदिरों के भित्ति चित्रों का विस्तृत अध्ययन।
13. सिंह, गोवर्धन, आर्ट एंड आर्किटेक्चर ऑफ हिमाचल प्रदेश-हिमाचल प्रदेश की मंदिर कला, स्थापत्य एवं भित्ति चित्र पर केंद्रित ग्रंथ।
14. सिन्हा, नीलाभ (संपा.), वॉल पेंटिंग साइट्स ऑफ हिमाचल प्रदेश-हिमाचल प्रदेश के विभिन्न मंदिरों में स्थित भित्ति चित्र स्थलों का प्रलेखन।
15. ठाकुर, लक्ष्मण एस., द आर्किटेक्चरल हेरिटेज ऑफ हिमाचल प्रदेश-हिमाचल प्रदेश के मंदिर स्थापत्य और उससे जुड़ी भित्ति कला का ऐतिहासिक विवेचन।
16. संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) से संबंधित प्रकाशन-भारतीय कला और सांस्कृतिक विरासत पर आधारित आधिकारिक अध्ययन सामग्री।